मक्का उत्तराखण्ड के पर्वतीय व मैदानी क्षेत्रों में खरीफ की एक महत्वपूर्ण फसल है। राज्य में इसकी खेती लगभग 24 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में हरे भुट्टे व दानों के लिये की जाती है। उत्तराखण्ड पर्यटन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण राज्य है जिस कारण वर्षभर यहाँ पर्यटकों की आवाजाही बनी रहती है। विशेषरूप से भुना हुआ भुट्टा पर्यटकों द्वारा काफी पसंद किया जाता है। परन्तु विगत कुछ वर्षों से राज्य में बेबीकॉर्न के उपयोग का प्रचलन भी बढ़ रहा है और यह प्रायः स्थानीय बाजारों में देखने को मिल जाता है। वर्तमान में इसकी आपूर्ति हरियाणा व दिल्ली से होती है परन्तु राज्य के कृषक आसानी से बेबीकॉर्न उत्पादन व विपणन कर अधिक आय अर्जित कर सकते हैं। स्थानीय रूप से उत्पादित होने पर ताजा व उच्च श्रेणी का बेबीकॉर्न उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर उपलब्ध हो सकेगा तथा भविष्य में प्रसंस्करण इकाईयों में खपत के लिये भी पर्याप्त मात्रा की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। आर्थिक दृष्टिकोण से भी साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न अधिक आय प्रदान करता है। मैदानी व निचले पर्वतीय क्षेत्रों में वर्ष में इसकी 3–4 फसलें ली जा सकती हैं। साथ ही बेबीकॉर्न की तुड़ाई के बाद हरा चारा भी उपलब्ध होता है। बेबीकॉर्न के साथ विभिन्न फसलों की अंतःफसली खेती भी की जा सकती है।

बेबीकॉर्न मक्के का अनिषेचित भुट्टा है जिसका आकार अंगुलीनुमा होता है। इसमें 2–3 सेमी. तक सिल्क (कोमल रेशे) निकले रहते हैं। इसे सिल्क निकलने के 1–3 दिन के भीतर तोड़ लिया जाता है। इसे कच्चा भी खाया जा सकता है तथा इसे विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों जैसे सलाद, सब्जी, सूप, पकोड़े, खीर इत्यादि के रूप में भी खाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इससे अचार, मुरब्बा, जैम इत्यादि भी बनाये जाते हैं। छिल्का रहित बेबीकॉर्न की उपयुक्त लंबाई 7–9 सेमी तथा व्यास 1–1.5 सेमी. होता है। यह एक पौष्टिक आहार है तथा इसमें अन्य तत्वों के साथ साथ फॉस्फोरस की अच्छी मात्रा रहती है। पूरी तरह से छिल्के से ढके होने के कारण यह कीटनाशकों के अवशेषों से मुक्त रहता है तथा कीट और रोगों से भी संरक्षित रहता है।

उपयुक्त किस्म का चयनः

बेबीकॉर्न की व्यवसायिक खेती हेतु उपयुक्त किस्म का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बेबीकॉर्न किस्म में अधिक उपजाऊपन (प्रत्येक पौधे में एक से अधिक भुट्टे) होना चाहिये। चूँकि बेबीकॉर्न की फसल में पौध सघनता अधिक होती है, चयनित किस्म में लॉजिंग (झुकना) के प्रति प्रतिरोधिता तथा उर्वरक की अधिक मात्रा के प्रति सकारात्मक प्रक्रियाशीलता होनी चाहिये। साथ ही महत्वपूर्ण रोगों व कीटों के प्रति रोधिता/सहिष्णुता होनी चाहिये। प्रमुख बेबीकॉर्न किस्मों का संक्षिप्त विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

तालिका 1: बेबीकॉर्न की उन्नत किस्में*

प्रजाति का नाम	प्रजाति का प्रकार	पौधों की ऊँचाई (सेमी.)	प्रथम तुड़ाई (दिनों में)	छिल्कारहित बेबीकॉर्न उपज (कु./है.)#
वी.एल. बेबीकॉर्न 1	संकुल	205–215 (पर्वतीय क्षेत्रों में) 175–185 (मैदानी क्षेत्रों में)	50–52 (पर्वतीय क्षेत्रों मे) 48–50 (मैदानी क्षेत्रों मे)	12–13
एच.एम. 4	संकर	200–210	50–52	13–14
सी.एम.वी.एल. बेबीकॉर्न 2	संकर	200–210 (पर्वतीय क्षेत्रों में) 170–185 (मैदानी क्षेत्रों में)	52–53 (पर्वतीय क्षेत्रों मे) 49–50 (मैदानी क्षेत्रों मे)	13–15

***निजी बीज संस्थानों की किस्में भी बाजार में उपलब्ध हैं, #1 हैक्टेयर = 50 नाली**

बेबीकॉर्न की खेती हेतु उन्नत सस्य विधियाँ

बुआई का उपयुक्त समय

उच्च पर्वतीय क्षेत्र	:	अप्रैल अंत से जून मध्य
मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्र	:	मई अंत से जुलाई का मध्य
निचले पर्वतीय क्षेत्र	:	जून प्रारंभ से जुलाई अंत तक
मैदानी क्षेत्र	:	वर्षभर

बेबीकॉर्न की खेती हेतु खेत की तैयारी, खरपतवार नियंत्रण तथा रोग व कीट प्रबंधन सामान्य मक्का की फसल की भाँति ही होती है परन्तु बीज दर, बुआई की विधि तथा पोषण प्रबंधन सामान्य मक्का से भिन्न होते हैं।

खेत की तैयारी

बेबीकॉर्न की खेती रेतीली भूमि से लेकर चिकनी मिट्टी में की जा सकती है। दोमट से भारी मिट्टी जिसमें कार्बनिक पदार्थ व नमी बनाये रखने की क्षमता अधिक हो तथा जल निकास का उचित प्रबंध हो, बेबीकॉर्न की खेती के लिये सर्वोत्तम रहती है। मिट्टी की भौतिक स्थिति को दुरूस्त रखने एवं उसकी जल ग्रहण क्षमता बढ़ाने हेतु पहली जुताई के समय 100–150 कुन्तल प्रति हैक्टेयर की दर से गोबर की खाद डालनी चाहिये। दूसरी जुताई में बुआई करनी चाहिये। चूँकि फास्फोरस व पोटाश की आवश्यकता हर खेत में समान नहीं होती है, बुआई के पूर्व मिट्टी की जाँच कर उर्वरकों की उचित मात्रा निश्चित कर डालनी चाहिये। कुरमुला, तना बेधक कीट, कटुवा कीट इत्यादि का प्रकोप हो तो फोरेट 10 जी 25 किग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देना चाहिये।

बीज दर एवं बुआई विधि

अच्छी फसल हेतु उपयुक्त किस्मों के गुणवत्तायुक्त बीज ही बोने चाहिये तथा बुआई कतार में करनी चाहिये। बेबीकॉर्न की फसल में पौध सघनता सामान्य मक्का की तुलना में लगभग दोगुनी होती है। कतार से कतार की दूरी 50 सेमी. व कतार में पौधे से पौधे की दूरी 15 सेमी. रखने से प्रति हैक्टेयर 1.3–1.4 लाख पौधे रखे जा सकते हैं। इस प्रकार एक हैक्टेयर क्षेत्रफल के लिये 30 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है। बुआई के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिये। बीज 5–6 सेमी. की गहराई में बोने चाहिये। बीज में फफूँद लगने से जमाव प्रभावित होता है तथा प्रारंभिक अवस्था में पौधों की जड़े व तना सड़ने लगते हैं। इसके बचाव के लिये कवकनाशी थीरम 3 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किग्रा. की दर से बीज को उपचारित कर बोना चाहिये।

पोषण प्रबंधन

पौध सघनता अधिक होने के कारण बेबीकॉर्न फसल में उर्वरक की मात्रा सामान्य मक्का से अधिक प्रयोग होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में उगायी जाने वाली किस्मों हेतु गोबर की खाद के अतिरिक्त 150 किग्रा. नत्रजन, 50 किग्रा. फास्फोरस व 60 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टेयर पर्याप्त है। फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा व नत्रजन की आधी मात्रा बुआई से पहले खेत में मिला लेनी चाहिये। नत्रजन की शेष मात्रा का आधा भाग पौधों के घुटने की ऊँचाई तक होने की अवस्था तथा आधा भाग नर मंजरी निकालने के बाद टॉप ड्रैसिंग के रूप में डालना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

यदि पौधे घने हों तो बुआई के 10–12 दिन के पश्चात कतारों में पौधों की छँटाई कर कमजोर पौधों को निकाल देना चाहिये। प्रारंभिक अवस्था में फसल को खरपतवारों से मुक्त रखना आवश्यक होता है। खरपतवारों के नियंत्रण हेतु अंकुरण के पूर्व एट्राजीन 50 प्रतिशत चूर्ण के 2.0 ली. या एलाक्लोर 50 ई.सी. के 4.0 ली. का 800 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करना चाहिये। यदि आवश्यक हो तो जमाव के 15–20 दिन में गुड़ाई कर खरपतवार निकाल लेने चाहिये।

पौधों पर मिट्टी चढ़ाना

जब पौधे घुटने तक ऊँचे हो जायें, नत्रजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग कर पौधों में मिट्टी चढ़ा देनी चाहिये। मिट्टी चढ़ाने के अनेक लाभ हैं। यह नत्रजन का रिसाव कम करता है, खरपतवारों को नियंत्रित करता है, पौधों को हवा के झोंकों से गिरने से रोकता है व खेत में जल निकासी में भी सहायक होता है। पौधों में नरमंजरी निकलते समय शेष बची नत्रजन की टॉप ड्रैसिंग करनी चाहिये।

रोग प्रबंधन

सामान्य मक्का की भाँति बेबीकॉर्न में भी रोगों की प्रभावी रोकथाम के लिये उचित उपाय करने आवश्यक है। बेबीकॉन के प्रमुख रोग व उनके प्रबंधन की जानकारी निम्न है।

टर्सिकम पर्ण अंगमारी या पत्तियों का झुलसा रोग

पत्तियों में रोग के प्रारम्भिक लक्षण छोटे–छोटे भूरे रंग के अनियंत्रित आकार के धब्बे के रुप में परिलक्षित होते है। अनुकूल परिस्थितियों में यह धब्बे अनियमित आकार, अण्डाकार या नाव के आकार में बढ़ते है व मिलकर पत्तियों के अधिकांश भाग को ढक देते है। यह भूरे धब्बे काले हो जाते है तथा पत्तियाँ रोग से झुलस कर सूख जाती है। इस रोग की रोकथाम हेतु रोग के प्रकट होते ही कवकनाशी मैंकोजेब (डायथेन एम 45) को 2.5 ग्राम पति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार 10 दिन के अन्तराल पर एक या दो छिड़काव और करने चाहिए।

मेडिस पर्ण झुलसा

प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों पर छोटे–छोटे, अनियमित आकार के भूरे धब्बे दिखाई देते है। अनुकूल परिस्थिति में यही धब्बे आकार में बढ़कर 2–3 सेमी. तक लम्बे हो जाते है। ये धब्बे आपस में मिलकर पत्तियों के अधिकांश भाग को ढक लेते है व पत्तियाँ झुलस कर सूख जाती हैं। रोग के लक्षण दिखते ही मैंकोजेब (डायथेन एम 45) के 2.5 ग्राम को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार 10 दिन के अन्तराल पर एक या दो छिड़काव और करने चाहिए।

धारीदार पर्ण व पर्णभित्ती झुलसा–बैन्डेड लीफ एन्ड सीथ ब्लाइट

इस रोग के विशिष्ट लक्षण सकेन्द्रित धब्बे जो रोग ग्रसित पत्तियों के बड़े भाग, पर्णभित्ती व भुट्टे के छिलके में दिखते है। ये धब्बे बढ़कर तथ हल्के व गहरे भूरे रंग के एकान्तर धारियों के रूप में दिखते है। रोग की उग्र अवस्था में भुट्टे भी प्रभावित होते है व सड़ जाते है तथा तने व भुट्टो मे हल्के भूरे कवक तन्तु तथा उनमें छोटे–छोटे गोल काले दाने स्कैलोरेसिया बनते है। रोग के लक्षण प्रकट हाते ही कवकनाशी मैंकोजेब (डायथेन एम 45) को 2.5 ग्राम प्रति ली. पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए तथा आवश्यकता पड़ने पर 10 दिन के अन्तराल पर एक या दो और छिड़काव करने चाहिए। कवकनाशी एजोक्सीस्ट्रोबिन 0.1% और नैटिवो 0.05% का छिड़काव भी फायदेमंद होता है। पौधे की निचली पत्तियों को तोड़कर इस रोग की प्रचंडता कम की जा सकती है।

कीट नियंत्रण

उत्तराखण्ड के पर्वतीय व मैदानी क्षेत्रों में तना बेदक व प्ररोह मक्खी बेबीकॉर्न की फसल के प्रमुख कीट हैं। इनके अतिरिक्त कटुआ कीट, माहू व फफोला भृंग भी मक्का की फसल को हानि पहुँचाते हैं। बेबीकॉन के प्रमुख कीट व उनके प्रबंधन की जानकारी निम्न है।

प्ररोह मक्खी *(एथेरीगोना सोकाटा)*

यह एक अत्यन्त छोटे आकार की मक्खी होती है जिसके शिशु या मैगट फसल को हानि पहुँचाते हैं। ये पौधों की प्रारंभिक अवस्था में मध्य प्ररोह में घुसकर उसके भीतरी भाग को खा जाते हैं। यह लक्षण डैड हार्ट कहलाता है। इस कीट का आक्रमण बसन्त ऋतु की मक्का में बहुत अधिक पाया जाता है। फिश मील ट्रैप (25 ट्रैप / हैक्टेयर, 1 ट्रैप/दो नाली) से फसल बुआई से 30 दिनों तक खेतों में प्रयोग करने से वयस्क कीटों को आकर्षित कर नष्ट किया जा सकता है। रासायनिक नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड (75 प्रतिशत डब्ल्यू.एस.) की 1.0 ग्राम/किग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। लक्षण दिखाई देने पर क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. की 2.0 मि.ली. मात्रा/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

घब्बेदार तना बेधक *(सिसेमिया इनफरेंस, कायलो पार्टेलस)*

तने में गाँठों के पास कीट द्वारा बनाये गये छेद इसके विशिष्ट लक्षण हैं। कभी कभी सूंडियां पौधे के ऊपरी भाग को भी खाती हैं। इस कीट की सूंडियां गुलाबी–भूरी जिनका सिर गहरे रंग का होता है, मध्य शिरा में सुरंग बनाकर तने में प्रवेश कर आंतरिक ऊतकों को खाती हैं। ये पत्तियों की निचली सतह में समूह में अंडे देती हैं। प्रकाश प्रपंच की सहायता से वयस्क कीटों को आकर्षित कर नष्ट किया जा सकता है। जैविक नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा प्रजाति के 1000–1200 अण्डे/नाली की दर से 7–10 दिनों के अन्तराल पर 3 से 4 बार छोड़ें। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्वीनॉलफॉस 25 ई.सी. की 2.0 मि.ली./लीटर अथवा क्लोरानट्रैनिलीप्रोल 0.3 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

कटुआ कीट *(एग्राटिस प्रजाति)*

इस कीट का प्रकोप फसल की प्रारम्भिक अवस्था में होता है। वयस्क गाढ़े भूरे रंग की तितली होती है। अगले पंख पर गाढ़े लहरदार धब्बे होते हैं परन्तु पिछला पंख हल्के रंग का होता है। ये वयस्क पत्तियों की निचली सतह अथवा जमीन में अण्डे देते हैं। सूंडियां रात्रि में कोमल तनों को खाते हैं। छोटे खेतों में इनकी सूंडियों को हाथ से चुनकर नष्ट किया जा सकता है। कीट के वयस्कों को प्रकाश प्रपंच द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। बतैन गिरी के पाउडर का 12.5 किग्रा/हैक्टेयर की दर से पौधों पर बुरकाव करना प्रभावी पाया गया है। रासायनिक नियंत्रण हेतु खेत की तैयारी के समय क्लोरपायरीफॉस 10 जी. का 20.0 किग्रा./हैक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला दें। बाद में प्रकोप होने पर क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 2.0 मि.ली./ली. पानी की दर से पौधे को चारों तरफ से तर कर दें।

माहू *(रोपैलोसिफम मेडिस)*

इसके शिशु व वयस्क दोनों ही रस चूसकर पौधों की वृद्धि को कम कर देते हैं एवं पत्तियों में मरोड़ जैसे लक्षण दिखते हैं। सामान्यतः कॉक्सीनेलिड एवं सिरफिड मित्र कीट माहू को खा जाते हैं। माहू का अधिक प्रकोप होने पर रासायनिक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल की 0.3 मि.ली. मात्रा/लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिये।

फफोला भृंग *(माइलाब्रिस प्रजाति)*

मक्के की फसल पर फफोला भृंग का प्रकोप बहुतायत में देखने को मिलता है। ये भृंग बड़ी, मजबूत, काले रंग की लाल धारियों के साथ होती हैं जिन्हें खेत में मक्का के फूलों एवं भुट्टे के मुलायम सिल्क को खाते हुए व एक स्थान से दूसरे स्थान उड़ते हुए देखा जा सकता है। ये उग्र रूप से खाने वाले कीट होते हैं। कम प्रकोप होने पर भृंगों को चुनकर नष्ट कर देना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु डेल्टामेथ्रिन 2.8 ई.सी. की 1.0 मि.ली. या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 0.3 मि.ली./ली. पानी का प्रयोग किया जा सकता है।

बेबीकॉर्न का निषेचन से बचाव

बेबीकॉर्न मक्के का अनिषेचित भुट्टा होता है। निषेचन होने पर भुट्टे में बीज बनने की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है जिससे बेबीकॉर्न की गुणवत्ता में कमी आती है तथा फसल का एक हिस्सा बेबीकॉर्न के रूप में प्रयोग हेतु अयोग्य भी हो सकता है जिससे कृषकों को नुकसान सहना पड़ सकता है। बेबीकॉर्न की फसल में निषेचन रोकने के लिये निम्न सावधानियों/प्रक्रियाओं का पालन करना आवश्यक है।

1. **पौधों में से नरमंजरी निकालना (डीटैसलिंग):** मक्के के पौधे के नर भाग को नरमंजरी (टैसल) कहा जाता है। यह बालीनुमा आकार का होता है तथा पौधे के शीर्ष भाग से निकलता है। इसके निकलते ही इसे पौधे से अलग कर देना देना चाहिये। नरमंजरी को निकालते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि नरमंजरी के साथ पौधे की पत्तियाँ ना निकलें क्योंकि इससे प्रकाश संशलेषण की प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा बेबीकॉर्न की उपज में कमी आती है। निकाली गयी नरमंजरियों को एकत्र कर बेबीकॉर्न की फसल से दूर कर देना चाहिये। नरमंजरियाँ पोषक होती हैं अतः इनका उपयोग पशु चारे के रूप में भी किया जा सकता है।

2. **सामान्य मक्का फसल से पृथक्करण:** बेबीकॉर्न की फसल को निषेचन से बचाने के लिये उसकी सामान्य मक्का की फसल से कम से कम 200 मी. की दूरी होनी चाहिये। ऐसा न होने पर पड़ोस की मक्का फसल के परागकण बेबीकॉर्न फसल को निषेचित कर उसकी गुणवत्ता प्रभावित कर सकती है।

बेबीकॉर्न की तुड़ाई व तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण

1. **बेबीकॉर्न की तुड़ाई:** जब भुट्टे की बाल 2–3 सेमी. हो जाये बेबीकॉर्न की तुड़ाई कर लेनी चाहिये। पौधे के निचले भाग में आये बेबीकॉर्न तुड़ाई के लिये पहले तैयार हो जाते हैं। तुड़ाई सुबह या शाम के समय करनी चाहिये। तुड़ाई के समय बेबीकॉर्न के ऊपर की पत्तियाँ नहीं हटानी चाहिये। पत्तियाँ हटने से बेबीकॉर्न जल्दी खराब हो जाता है।

2. **बेबीकॉर्न की गुणवत्ता: बेबीकॉर्न** का रंग क्रीम या हल्का पीला होना चाहिये। दानें एवं पंक्तियाँ नियमित व सीधी होनी चाहिये। इन पर किसी प्रकार के धब्बे व चिन्ह नहीं होने चाहिये। अधिक पकी अथवा सूखी नहीं होनी चाहिये। इनकी ट्रिमिंग (बेबीकॉर्न के रेशों को निकालना) साफ तरीके से होनी चाहिये।

3. **बेबीकॉर्न का श्रेणीकरण:** बेबीकॉर्न की तुड़ाई सही अवस्था पर करनी आवश्यक है अन्यथा उसकी गुणवत्ता में कमी आती है। बेबीकॉर्न के रंग, आकार व प्रकार में समानता होनी चाहिये। विपणन से पूर्व इनका श्रेणीकरण आवश्यक होता है ताकि यह तय किया जा सके कि कौन सी श्रेणी किस बाजार हेतु उपयुक्त है।

4. **बाजार तक पहुँचाना:** प्रसंस्करण सुविधा न होने पर इसको जल्दी ही बाजार में पहुँचाना आवश्यक होता है। इसके लिये ठण्डे छायादार स्थान पर इसके छिल्के तथा बाल उतार कर छँटाई कर प्लास्टिक की छोटी थैलियों में पैकिंग कर बाजार में भेजा जाता है। क्रेटों में बर्फ के बीच रख इन्हें कुछ और समय तक ताजा रखा जा सकता है। प्रसंस्करण इकाईयाँ होने पर बेबीकॉर्न को यथाशीघ्र उन तक पहुँचा कर देना चाहिये।

5. **विपणन:** बड़े स्तर पर बेबीकॉर्न की खेती के लिये पूर्व सुनिश्चित बाजार होना आवश्यक है परन्तु यदि छोटे स्तर पर इसकी खेती की जाती है तो स्थानीय बाजार में ही इसकी खपत हो जाती है।

6. **प्रसंस्करण:** बेबीकॉर्न की शैल्फ–लाइफ बढ़ाने के लिये इसे प्रसंस्कृत किया जाता हैं। प्रमुख प्रसंस्करण विधियाँ कैनिंग (डिब्बाबंदी), डीहाईड्रेशन (निर्जलीकरण) एवं फ्रीजिंग (प्रशीतन) हैं।

बेबीकॉर्न की फसल से हरा चारा

बेबीकॉर्न में प्रजाति व मौसम के अनुसार 4–5 तुड़ाईयाँ ली जा सकती हैं। चूँकि तुड़ाई समाप्त होने पर पौधा हरा ही रहता है, उसका चारे हेतु उपयोग किया जा सकता है। बेबीकॉर्न की तुड़ाई के बाद फसल से 300–350 कु./है. हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। बेबीकॉर्न के छिल्कों का भी चारे के रूप में उपयोग किया जाता है। एक हैक्टेयर में बेबीकॉर्न के छिल्कों के रूप में हैक्टेयर में 40–45 कु. हरा चारा मिल सकता है। इस प्रकार बेबीकॉर्न की फसल से न केवल बाजार हेतु बेबीकॉर्न मिलता है बल्कि पशुओं हेतु पौष्टिक हरा चारा भी मिलता है जिससे अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है तथा शुद्ध चारे के लिये उपयोग में लायी जाने वाली भूमि अन्य नकदी फसलों की खेती हेतु उपयोग में लायी जा सकती है।

बेबीकॉर्न के बढ़ते प्रचलन तथा भविष्य में इसकी संभावनाओं के दृष्टिगत बेबीकॉर्न की खेती एक अच्छा विकल्प है तथा कृषक उपयुक्त किस्में व उपरोक्त उन्नत सस्य विधियाँ अपनाकर सीमित क्षेत्रफल से कम समय में अधिक आय अर्जित कर सकते हैं।

प्रमुख संदर्भ: साई दास, वी.के. यादव, एम.एल. जाट, जे.सी. शेखर एवं योगेन्द्र यादव (2012). बेबीकॉर्न की खेती एवं उपयोग। डी.एम.आर. तकनीकी बुलेटिन 1012/3, मक्का अनुसंधान निदेशालय, नई दिल्ली।

आलेख:
राजेश खुल्बे, दिबाकर महान्त, राजशेकरा एच, जे स्टेनली, जी एस बिष्ट, एम सी पन्त, लक्ष्मी कान्त व अरूणव पट्टनायक

मुद्रण सहयोग
पी.एम.ई. सैल

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें:
निदेशक
भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)–263601
दूरभाष: 05962–230060, 230208 फैक्स: 05962–231539
ईमेल: vpkas@nic.in, director.vpkas@icar.gov.in

Design & Printed at : APNA JANMAT, D.Dun # 0135-2653420, 9837209996

भाकृअनुप-वि.प.कृ.अनु.सं. प्रसार प्रपत्र (109/2017)

बेबीकॉर्न
की व्यवसायिक खेती

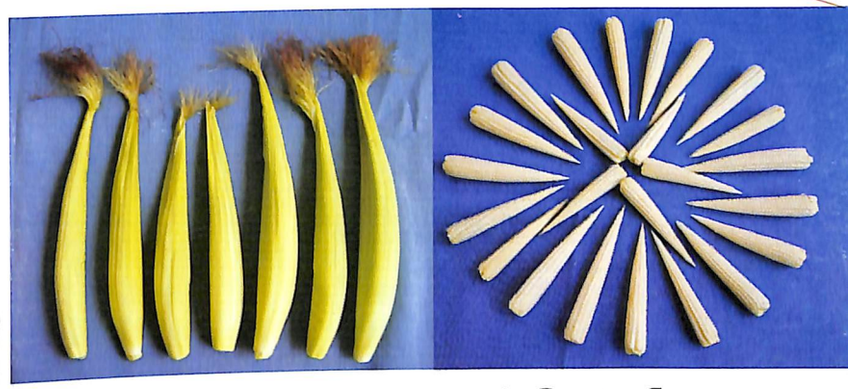

सी.एम.वी.एल. बेबीकॉर्न 2

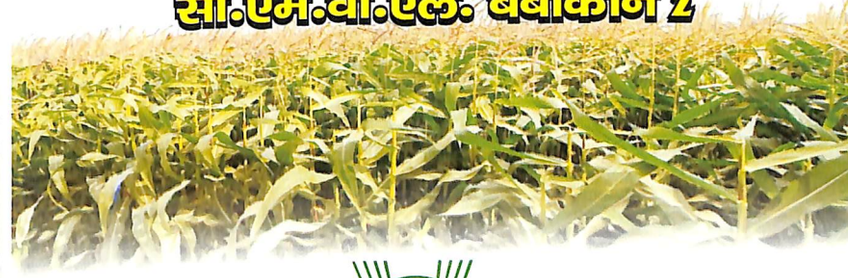

भाकृअनुप
ICAR

भाकृअनुप-विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
(आई एस ओ 9001 : 2008 प्रमाणित संस्थान)
अल्मोड़ा 263 601 (उत्तराखण्ड)

2017

निःशुल्क कृषक हैल्पलाइन सेवा: 1800 180 2311
(सोमवार से शनिवार प्रत्येक कार्यदिवस प्रातः 10.00 बजे से सांय 5.00 बजे तक)